उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्ययन मार्गदर्शिका

अध्याय दस:

बाइबल आधारित संस्कृति एवं आधुनिक उपयोग

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विषय-वस्तु सूची

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें 3

नोट्स 4

I. **परिचय** (0:20) 4

II. **नींव** (3:10) 4
- क. महत्व (4:05) 4
- ख. विरोधाभासी आदर्श (11:32) 5
- ग. विविधता (16:41) 6

III. विकास (23:33) 7
- क. महत्व (24:13) 7
- ख. विरोधाभासी आदर्श (28:38) 8
- ग. विविधता (34:20) 9

IV. उपयोग (39:00) 10
- क. महत्व (40:00) 10
- ख. विरोधाभासी आदर्श (45:20) 11
- ग. विविधता (49:53) 12

V. **सारांश** (53:00) 13

पुनर्विचार हेतु प्रश्न 14

लागू करने हेतु प्रश्न 19

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें

इस अध्ययन मार्गदर्शिका को सम्बद्ध वीडियो अर्थात् चलित दृश्य अध्यायों के साथ संयुक्त रूप में उपयोग करने के लिए निर्मित किया गया है। यदि आपके पास वीडियो उपलब्ध नहीं हैं, तो यह अध्ययन मार्गदर्शिका ऑडियो अर्थात् श्रव्य अध्याय और/या अध्याय की मूल प्रतियों के संस्करणों के साथ कार्य करने के लिए भी सहायता देंगे। इसके अतिरिक्त, अध्याय और मार्गदर्शिका की मंशा एक सीखने वाले समुदाय के उपयोग के लिए की गई है, परन्तु साथ ही इनका उपयोग यदि आवश्यक है तो व्यक्तिगत् अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप अध्याय को देखें**
    - **स्वयं को तैयार करें** – किसी भी अनुशंसित अध्यायों को पढ़ कर पूरा कर लें।
    - **देखने के लिए समय निर्धारित करें** – इस मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड में, अध्याय को उन भागों में विभाजित किया गया है जो कि वीडियो के साथ सम्बद्ध हैं। प्रत्येक मुख्य भाग के साथ दिए हुए लघुकोष्ठकों में दिए हुए समय कोड्स का उपयोग, यह निर्धारित करता है कहाँ से अध्याय देखना आरम्भ किया जाए और कहाँ देखना समाप्त होता है। थर्ड मिलेनियम के अध्याय सघनता से सूचनाओं के साथ भरे हुए हैं, इसलिए हो सकता है कि आप इसे कई टुकड़ों में देखना चाहेंगे। इन टुकड़ों को मुख्य भागों के अनुसार होना चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हैं तब**
    - नोट्स बनाएं — अध्ययन मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड अध्याय की मूल रूपरेखा की जानकारी रखते हैं, जिसमें प्रत्येक खण्ड को आरम्भ किए जाने के लिए समय कोड्स और कुँजी नोट्स सम्मिलित हैं जो कि आपका मार्गदर्शन इन सूचनाओं के लिए करेंगे। अधिकांश मुख्य विचारों को पहले से ही सारांशित कर दिया गया है, परन्तु इन्हें स्वयं के नोट्स के द्वारा पूरक किया जाना सुनिश्चित करें। आपको समर्थन देने वाली अतिरिक्त सामग्री को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को स्मरण करने, विवरण देने से और इनका बचाव करने में सहायता प्रदान करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिख लें** – जब आप वीडियो को देखते हैं, तब हो सकता है कि जो कुछ आप सीख रहे हैं उसके प्रति आपके पास टिप्पणियाँ और/या प्रश्न हों। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को हाशिये में लिखें ताकि इन्हें आप अध्याय को देखने के पश्चात् समूह के साथ साझा कर सकते हैं।
    - **अध्याय के भागों को देखते समय लघु ठहराव/पुन: आरम्भ बटन का उपयोग करें –** आप पाएंगे कि कुछ निश्चित स्थानों पर पुनर्विचार के लिए कठिन अवधारणाएँ, या रूचिपूर्ण बातों पर विचार विमर्श या अतिरिक्त नोट्स लिखने के लिए वीडियो का लघु ठहराव या इसे पुन: आरम्भ करना सहायतापूर्ण है।
- **आपके द्वारा अध्याय को देख लेने के पश्चात्**
    - **पुनर्विचार के लिए प्रश्नों को पूरा करें** – पुनर्विचार के लिए प्रश्न अध्याय की मूल विषय-वस्तु के ऊपर आधारित है। आपको उपलब्ध किए हुए स्थान में पुनर्विचार के प्रश्नों के उत्तर को देना चाहिए। इन प्रश्नों को एक समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत् रूप से पूरा किया जाना चाहिए।
    - **उपयोग के लिए प्रश्नों का उत्तर दें/विचार विमर्श करें** – उपयोग हेतु प्रश्न ऐसे प्रश्न हैं जो कि इस अध्याय की विषय-वस्तु के साथ सम्बद्ध होते हुए मसीही जीवन यापन, धर्मविज्ञान और सेवकाई से सम्बधित हैं। उपयोग हेतु प्रश्न लिखित गृहकार्यों या समूह के विचार विमर्श के लिए विषयों के लिए उपयुक्त हैं। क्योंकि लिखित गृहकार्यों के लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए।

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:20)

Culture: The intersecting patterns of concepts, behaviors and emotions that characterize a community.

II. नींव (3:10)

क. महत्व (4:05)

उत्पत्ति के पहले ग्यारह अध्यायों में सृष्टि से लेकर इस संसार और मनुष्य की संस्कृति के लिए परमेश्वर के आदर्शों के नूमनों की नींव रखते हैं।

सांस्कृतिक आदेश (उत्पत्ति 1:28) संकेत देता है कि मानव जाति का दायित्व सृष्टि को परमेश्वर की अन्तिम दिखाई देने वाली महिमा की तैयारी के लिए विकसित करना था।

प्रत्येक सांस्कृतिक आधारित घटनाक्रमों का विकास परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होना परमेश्वर के लिए पवित्र राजकीय सेवा के समान है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

ख. विरोधाभासी आदर्श (11:32)

बाइबल के लेखकों के लिए, सभी संस्कृतियाँ मूल रूप से किसी दो में से एक श्रेणियों में आते हैं: ऐसे सांस्कृतिक आदर्श जो कि परमेश्वर की सेवा करते हैं और ऐसे सांस्कृतिक आदर्श जो कि उसका विरोध करते हैं।

आदम और हव्वा के पाप में पतन मानव प्राणियों को दो भिन्न सांस्कृतिक पथों पर चलने के लिए नेतृत्व प्रदान करता है (उत्पत्ति 3:15):

- स्त्री की संतान से चाहा कि वह परमेश्वर की सेवा विश्वासयोग्यता से करे।

- सर्प की संतान ने चाहा कि वह उसका विरोध करे।

मानव संस्कृति के इन दो पथों के मध्य समानताएँ दो कारणों से घटित होती हैं:

- परमेश्वर का सामान्य अनुग्रह शैतान और उन लोगों की पापपूर्ण प्रवृति जो उसका अनुसरण करते हैं को रोकती है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

- पाप निरन्तर उन लोगों को भ्रष्ट करता चला जाता है जो कि परमेश्वर के पथ का विरोध करते हैं।

ग. विविधता (16:41)

परमेश्वर ने उत्पत्ति के प्रथम अध्यायों में से ही सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार किया है।

सांस्कृतिक विविधता निम्न रूप से विकसित हुई:

- विशिष्ठ प्रकाशन: परमेश्वर का स्वयं और उसकी इच्छा को कुछ चुने हुए लोगों के ऊपर प्रगट करना।

- सामान्य प्रकाशन : परमेश्वर का स्वयं और उसकी इच्छा को सारी सृष्टि में प्रकट करना।

परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों ने उसी विशिष्ठ प्रकाशन का विभिन्न तरीकों से, यहाँ तक कि एक ही समय में आज्ञापालन किया।

मनुष्य ने अक्सर उसी विशिष्ठ प्रकाशन को विविध तरीकों से कई बार जीवन में लागू किया है

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

इस आरम्भिक विविधता ने बाइबल आधारित इतिहास और आज के लिए भी परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के समाजों के लिए सांस्कृतिक विविधता की नींव को रखा।

III. विकास (23:33)

क. महत्व (24:13)

पुराने नियम में संस्कृति का महत्व अत्यधिक स्पष्ट रूप से उस मात्रा में प्रकट होता है जिसमें आरम्भिक पवित्रशास्त्र इस्राएल के ऊपर एक जाति के रूप में ध्यान देता है।

सबसे बड़ा सांस्कृतिक विकास पवित्रशास्त्र में पुराने नियम से मसीह में नई वाचा के युग में परिवर्तित होने के युग के समय घटित हुआ।

यहूदी शास्त्रियों ने मसीह के आने से पहले के पूरे इतिहास को "इस युग" के रूप में संकेत दिया है, और उन्होंने यह सिखाया की जब मसीह प्रकट होगा, तो वह "आने वाले युग" को लेकर आएगा।

यीशु और उसके प्रेरितों ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसका शासन तीन अवस्थाओं में खुलेगा: उदघाटन, निरन्तरता, और उसके राज्य के शिरो-बिन्दु पर।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

नए नियम के प्रत्येक हिस्से के अंश किसी न किसी तरीके से इस बात का निपटारा करते हैं कि कैसे मसीह मानवीय संस्कृति के लिए परमेश्वर के प्रयोजनों को उसकी पूर्णता में लाएगा।

ख. विरोधाभासी आदर्श (28:38)

पुराने नियम के लेखकों ने सर्प की संतानों का सम्बद्ध अन्यजाति राष्ट्रों और हव्वा की संतानों का इस्राएल के साथ किया है:

- अन्यजाति राष्ट्रों ने उनकी संस्कृति का विकास झूठे देवताओं और इस्राएल के परमेश्वर के विरोध में की जाने वाली सेवा में विकसित किया।

- इस्राएल ने परमेश्वर की मूसा के द्वारा दी गई धार्मिकता से भरी हुई व्यवस्था को अपना लिया था, और उन तरीकों से जीवन यापन करने की कोशिश की थी जो एक सच्चे परमेश्वर की महिमा करती हो।

पुराना नियम और पुरातत्वशास्त्र यह इंगित करता है कि इस्राएली ओर अन्यजाति संस्कृतियाँ कई तरीकों से आपस में एक जैसी थी।

नए नियम के लेखकों ने मसीह के अनुयायियों को स्त्री के बीज के साथ जोड़ा है और अविश्वासियों को सर्प के बीज के साथ जोड़ा है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

जब संस्कृति का विकास बाइबल में हुआ, तो उस समय आरम्भिक मसीहियों ने अक्सर उन प्रथाओं और दार्शनिक दृष्टिकोणों का समर्थन किया जिन्हें अविश्वासी अनुसरण कर रहे थे।

ग. विविधता (34:20)

जब इस्राएल के बीच में रहने वाली विभिन्न संस्कृतियों ने विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर के विशेष और सामान्य प्रकाशनों को लागू किया, तो परिणामस्वरूप विविध संस्कृतियों के आदर्श उभर कर सामने आ आई।

समुदायों के मध्य सांस्कृतिक विभिन्नताएँ एक साथ प्रकट हुए :

- लेवी याजकों ने परमेश्वर की व्यवस्था को उनके समाजों में निश्चित तरीके से लागू किया।
- राजाओं और अन्य राजनैतिक नेताओं ने परमेश्वर की व्यवस्था को भिन्न तरीके से लागू किया।
- परिवार ने उसके सदस्यों के लिए उपयुक्त तरीके से परमेश्वर की व्यवस्था को लागू किया।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

नई वाचा के युग में, लोगों में मतभेदों और परिस्थितियों ने मसीही समाजों को बाइबल आधारित शिक्षाओं को एक दूसरे से भिन्न तरीके से लागू करने के लिए नेतृत्व प्रदान किया है।

IV. उपयोग (39:00)

पवित्रशास्त्र हमारे विश्वास के सांस्कृतिक आयामों के ऊपर इतना ज्यादा जोर देता है कि हमें पवित्रशास्त्र को आज की संस्कृति के लिए स्वयं को समर्पित करना होगा।

क. महत्व (40:00)

महान् आदेश या "सुसमाचारीय आदेश" मसीह ने उसके अनुयायियों का मिशन उसकी महिमा में वापस आने के समय तक सार देता है (मत्ती 28:19-20)।

सुसमाचारीय आदेश उत्पत्ति 1:28 में मानव जाति को उत्पत्ति के आरम्भ में दिए गए सांस्कृतिक आदेश में गूँजता है।

- आदम और हव्वा को परमेश्वर के स्वरूप होने के कारण इस संसार को भर देना था, मसीही विश्वासियों को भी परमेश्वर के छुटकारा पाए हुओं के रूप में गुणन करना है।

- आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा को पूरा करने के द्वारा इस पृथ्वी को भरना और इसे अपने अधीन करना था; मसीही विश्वासियों को भी सारे राष्ट्रों को परमेश्वर की आदेश की शिक्षा देकर पूरा करना था।

- आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना था और इस पृथ्वी को अपने अधीन करके संस्कृति को निर्मित करना था; हमें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना है और राष्ट्रों को शिष्य बनाते हुए संस्कृति का निर्माण करना है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

जब मसीह के अनुयायियों ने विश्वासयोग्यता से स्वयं को शिक्षाओं के लिए समर्पित करते और प्रत्येक राष्ट्र को सिखाने का कार्य करते हैं, तो हम सकारात्मक रूप से प्रत्येक संस्कृति के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

ख. विरोधाभासी आदर्श (45:20)

राज्य की निरन्तरता के दौरान, मानव जाति निरन्तर सर्प की सन्तान और हव्वा की सन्तान के रूप में विभाजित होती रहती है।

जब तक मसीह पुन: वापस नहीं आ जाता, उसके लोग पृथ्वी पर निरन्तर पाप के शेष बचे हुए प्रभाव से संघर्षरत् रहेंगे।

मसीह के अनुयायी होने के नाते, यह हमारा दायित्व है कि हम उन सांस्कृतिक पथों का अनुसरण करें जो कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सत्य हैं और उनसे बचें जो कि नहीं हैं।

चार तरीकों को पाते हैं जिनमें परमेश्वर ने सांस्कृतिक आदर्शों को निर्देशित किया है:

- स्थाई स्वीकरण (उदाहरण के लिए, विवाह और कार्य)

- अस्थाई अनुमोदन (उदाहरण के लिए, मिस्र से कनान की ओर उनके पलायन के समय इस्राएलियों के गोत्रों के बीच का प्रबन्ध।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

- अस्थाई सहनशीलता (उदाहरण के लिए, बहुविवाह और दासता)

- स्थाई अस्वीकृति (उदाहरण के लिए, अन्याय और मूर्तिपूजा)

एक सांस्कृतिक आदर्श को आज के हमारे जीवनों में लागू करने के लिए जिसे हम बाइबल में पाते हैं :

- हमें प्रसंग में ही परमेश्वर के मूल्याकंन की ओर देखना चाहिए।

- अन्य प्रसंगों से प्रासंगिक नैतिक मापदण्डों की खोज करनी चाहिए।

- बाइबल आधारित तत्वों की पृष्ठभूमि में लक्ष्यों और उद्देश्यों का निर्धारण करना चाहिए।

ग. विविधता (49:53)

परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों ने तेजी से प्रगति करती हुई विविध संस्कृतियों में जीवन यापन की चुनौतियों का सामना किया है।

पौलुस की प्रतिबद्धता ने सुसमाचारीय आदेश को पूरा करने के लिए एक विस्तृत श्रृंखला वाली सांस्कृतिक अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को अपना लिया था (1 कुरिन्थियों 9: 19-23)।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पौलुस ने संस्कृति को संस्कृति के मापदण्डों को अपनाए बिना ही अपना लिया था जो अन्तत: उसे केवल परमेश्वर के न्याय के अधीन ले आएंगे।

मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों को पवित्रशास्त्र को उस समय लागू करने के लिए तैयार रहना चाहिए जब कभी उनका सामना अन्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से होता है।

पवित्रशास्त्र के प्रति सच्चे बने रहना जब हम इसे विभिन्न तरीकों से हमारे समुदायों में लागू करते हैं जो कि आधुनिक उपयोग के आयामों की एक सबसे ज्यादा अधिक जटिलता है।

हमें निरन्तरताओं और अंतरालों में सावधानी के साथ प्रत्येक बार जब हम हमारे आज के दिनों में पवित्रशास्त्र के सांस्कृतिक आदर्श को लागू करते समय भिन्नता करनी चाहिए।

V. सारांश (53:00)

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पुनर्विचार हेतु प्रश्न

1. उन बाइबल आधारित नींवों का वर्णन करें जिन्होंने संस्कृति के महत्व को स्थापित किया है। कैसे उत्पत्ति के आरम्भिक अध्याय संसार और मानवीय संस्कृति के लिए परमेश्वर की योजना को निर्मित करते हैं?

2. अभी तक के इतिहास में मानव के द्वारा उपयोग किए गए कौन से दो विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्श हैं? कैसे बाइबल इन आदर्शों का स्थापित करती है?

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

3. कैसे सबसे पहले दोनों अर्थात् विशेष प्रकाशन और सामान्य प्रकाशन के द्वारा सांस्कृतिक विविधता निर्मित हुई है?

4. क्यों बाइबल के इतिहास के विकास के लिए संस्कृति महत्वपूर्ण और आवश्यक थी?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

5. बाइबल के इतिहास के काल में कैसे दो विरोधाभासी संस्कृति आदर्श विकसित हुए हैं का वर्णन करें। उन समूहों की व्याख्या करें जिन्होंने इनमें से प्रत्येक आदर्श का अनुसरण पुराने नियम में किया है और वर्णन करें कि कैसे और क्यों यह नए नियम में परिवर्तित हो गया है।

6. वर्णन करें कि कैसे पवित्रशास्त्र में सांस्कृतिक विविधता निर्मित हुई है। उन सांस्कृतिक विविधताओं का उदाहरण दें जो एक ही समय में विभिन्न समुदायों में प्रगट हुई हैं और वे विविधताएँ जो समय के व्यतीत होने के साथ एक ही समुदाय में प्रगट हुए हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

7. पवित्रशास्त्र के आधुनिक उपयोग के लिए क्यों संस्कृति एक महत्वपूर्ण पहलू है ?

8. वर्णन करें कि कैसे पवित्रशास्त्र का आधुनिक उपयोग दो विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्श को प्रभावित करता है। उन चार तरीकों के बारे में बताएँ जिन्हें परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में सांस्कृतिक आदर्श के रूप में निर्देशित किया है जो कि उस समय सहायता करते हैं जब हम बाइबल को आज अपने जीवन में लागू करते हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

9. अपने से भिन्न संस्कृति को अपनाने के बारे में पौलुस के अनुभव और आत्मबोध हमें क्या शिक्षा देते हैं? हमें कैसे सांस्कृतिक भिन्नता का निपटारा करना चाहिए जब हम पवित्रशास्त्र को हमारे आधुनिक संदर्भ में लागू करते हैं?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

लागू करने हेतु प्रश्न

1. सांस्कृतिक आदेश का आपकी सेवकाई और/या कार्य के ऊपर क्या प्रभाव पड़ा है ?

2. कैसे बाइबल आधारित संस्कृति का महत्व आपके अध्ययन और पवित्रशास्त्र के जीवन में लागूकरण को प्रभावित करता है?

3. उत्पत्ति 3 में प्रगट संस्कृति विभाजन का आपके सांसारिक दृष्टिकोण और सेवकाई के दृष्टिकोण के ऊपर क्या प्रभाव पड़ा है?

4. उन सांस्कृतिक विविधताओं के कुछ विशेष उदाहरण दें जिन्हें आपने व्यक्तिगत् रूप से अनुभव या अवलोकन किया है। आप किस तरह से इस विविधता का निपटारा करते हैं?

5. किस तरह से बाइबल के इतिहास में संस्कृति का विकास पुराने नियम के आपके अध्ययन को प्रभावित करता है?

6. क्योंकि विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्श हमारे आधुनिक संदर्भ में भी अस्तित्व में हैं, परिणामस्वरूप आप किस तरह सुसमाचार प्रचार के कार्य को करते हैं?

7. वे कौन सी कुछ विशेष बातें हैं जिन्होंने आपकी संस्कृति को समय के व्यतीत होने के साथ परिवर्तित कर दिया है ? इन परिवर्तनों के क्या प्रभाव आपकी संस्कृति के ऊपर पड़े हैं?

8. किस तरह से आप अपनी संस्कृति को अपनी वर्तमान की सेवकाई या कार्य के द्वारा प्रभावित कर रहे हैं?

9. पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति के रूप में आपकी संस्कृति में आपका दिखाई देना कैसा होगा? क्या यह किसी अन्य संस्कृति में भिन्न दिखाई देगा ? अपने उत्तर की व्याख्या करें।

10. पवित्रशास्त्र के एक संदर्भ का चुनाव करें और आज के संसार की दो भिन्न संस्कृतियों के बारे में सोचे। और कैसे इस संदर्भ को इन दोनों संस्कृतियों में लागू करेंगे?

11. किस तरह से आप विश्वासयोग्यता के साथ पवित्रशास्त्र में मिलने वाले सांस्कृतिक आदर्श को अपनी समकालीन परिस्थतियों में लागू कर सकते हैं?

12. इस अध्याय से कौन सी सबसे महत्वपूर्ण बात को आपने सीखा है?

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org